International Journal in Management and Social Science
Volume 07 Issue 09, September 2019 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 6.178
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

महिला एवं पुरुष शिक्षकों में व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन

विनोद कुमार सिंह,[1],डॉ. आई.एम सिंह[2]

बी.एड विभाग

[1,2]श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय(उत्तर प्रदेश)–भारत

सार

लोकतान्त्रिक दर्शन का अन्तर्निहित सिद्धान्त है कि ''प्रत्येक बालकको अपना पूर्ण विकास का अधिकार है।'' शिक्षा क्षेत्र में सभी बालकों के लिएशिक्षा में भी इसका अर्थ लगाया जाने लगा है। इस कथन से आशय हैकि प्रत्येक बालक को अपनी क्षमता के अनुसार अधिगम में सहायता प्राप्तकरने का अधिकार है, चाहे वह क्षमता भले ही कम या अधिक हो । अतःयह जनतांत्रिक दर्शन के अनुकूल है कि सभी बालकों को सीखने केअवसर प्रदान किये जाऐं, भले ही छात्र, औसत, कुषाग्र, पिछड़े, दृष्टिहीन,गूंगे या श्रवणबाधित हो । एक सामान्य विद्यार्थी जहां प्रायः स्वयं को सक्षम, योग्य पाता है,आत्माभिमान से परिपूर्ण हो जाता है, वहीं एक श्रवणबाधित बालक के लिएस्वयं को मूल्यहीन, दीन–हीन मानना अति सहज है, कारण वह इन गुणोंसे वंचित है ।

प्रस्तावना

प्राकृति का गहनता पूर्वक अध्ययन करने में हम पाते हैं कि ईश्वर ने सृष्टि की रचना बहुत ही व्यवस्थित ढंग से की है। प्रकृति यदि व्यक्तिगत विभिन्नताएँ करती तो जीवन सम्भव न था, यदि किसी प्रकार जीवन सम्भव भी हो पाता तो संस्कृति तथा सभ्यता की उन्नति कदापि सम्भव न थी। फिर भी विशिष्ट पहचान हेतु प्रकृति जीवों में मनोशारीरिक असमानता के आधार पर व्यक्तिगत विभिन्नता रखती है।

शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक आदि रूपों स सामान्य बालकों से अलग रहने वाले बालक विशिष्ट बालक कहलाते है। ये सामान्य बालकों की तरह सामान्य शिक्षा व्यवस्था में समायोजित नही हो पाते है। प्राचीन काल में शिक्षा के आधार पर विद्यार्थियों में अंतर किया था। आयु की विभिन्नता के आधार पर बालक को भिन्न भिन्न प्रकार की शिक्षा दी जाती है। जैसे–जैसे आयु बढ़ती थी, उसकी के अनुसार पाठ्यक्रम को अधिक विस्तृत और कठिन बनाया जाता था। आयु के अलावा थोड़ा बहुत बुद्धि की विभिन्नता पर भी ध्यान रखा जाता था। इसके साथ ही साथ शैक्षिक सम्प्राप्ति को मध्यकाल में

व्यक्तिगत विभिन्नताओं का तात्पर्य किसी विषय पर अधिकार करने की योग्यता से समझा जाता था। इसी प्रकार की स्थिति आधुनिक काल में भी देखने को मिलती है। हमने व्यक्तिगत विभिन्नता को मापने का एकमात्र माध्यम बौद्धिक योग्यता को ही मान लिया, परन्तु दिव्यांग बालकों की ओर से मुंह मोड़ जाता है।

वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक बालक को अपना पूर्ण विकास का अधिकार दिया गया है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में सभी बालकों को सीखने के अवसर प्रदान किया जाता है, भले ही वह छात्र औसत, कुशान, दृष्टिहीन, श्रवणबाधित या किसी भी प्रकार की शारीरिक अक्षमता से ग्रसित है।आंख देखकर, कान सुनकर तथा गला बोलकर बालक को नवीन अनुभव अर्जित करने में सहायता पहुंचाते हैं, लेकिन देखा गया है कि या तो जन्म से या बाद में बीमारी या चोट के कारण बालक की ये इन्द्रियां क्षतिग्रस्त होकर अपनी कार्य करने की आंशिक क्षमता खो देती है। इस प्रकार आंशिक रूप से क्षति ही इन्द्रियों की हानि कहलाती है। इस क्षति के कारण कक्षा में बालक सामान्य बालकों की भांति सीख नहीं पाता है।

वर्तमान में शिक्षा के स्वरूप एवं उसके कार्यों में अत्यंत तीव्र गति से परिवर्तन आ रहा है। आज देश में दिव्यांग छात्रों की शिक्षा पर अत्यंज जोर दिया जा रहा है। वर्ष 2011 की जनगणना के आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में दिव्यांगों की कुल जनसंख्या वर्ष 2001 के 219 मिलियन से बढ़कर वर्ष 2011 में 26.8 मिलियन हो गई है। दिव्यांग जनसंख्या में बढ़ोत्तरी होने के साथ शिक्षा शास्त्रियो के मानस पटल पर दिव्यांगों के शिक्षण अभिगम की जटिल समस्या भी बनी हुई है। हालांकि भारत के संविधान में अपने सभी नागरिकों के लिए समानता, स्वतन्त्रता, न्याय व गरिमा सुनिश्चित की गई हैं और इसमें स्पष्ट रूप से दिव्यांग व्यक्तियों समेत एक संयुक्त समाज बनाने पर जोर डाला गया है। हाल के वर्षों में दिव्यांगों के प्रति समाज का नजरिया तेजी से बदला है।

प्रतियोगिता के इस युग में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिव्यांग बालकों को मी उच्च उपलब्धियों की आवश्यकता है। इसके के लिए दिव्यांग बालकों को उचित मार्गदर्शन व प्रोत्साहन की आवश्यकता है, ताकि दिव्यांग बालक भी सामान्य बालकों की तरह राष्ट्र की उन्नति अपना बहुमूल्य योगदान दे सकें। इस हेतु दिव्यांग बालकों में श्रेष्ठ अध्ययन आदतें जैसे– शिक्षण से पूर्व अध्ययन करना, विद्यालय मे नियमितता, गृहकार्य, स्वमूल्यांकन व स्वाध्याय करना आदि का विकास, आत्मचेतना, समन्वय, समायोजन, सामाजिक दृढता व इच्छाशक्ति आदि का निर्माण आवश्यक है।

हालांकि दिव्यांग विद्यार्थियों की आवश्यकताएं मी सामान्य विद्यार्थियों के समान ही होती है, परंतु उन्हें संतुष्ट करने के लिए आवश्यक उपाय बहुत ही सीमित होते है, उन्हें अधिक बाधाएं सहनी पड़ती है। जिससे उनके समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक विसंगतियों दृष्टिगत होती है। समुचित विकास न होने के कारण दिव्यांग बालकों को समाज व व्यक्तियों के साथ समायोजन त्यापित करने में कठिनाइ

महसूस होती। एक सामान्य विद्यार्थी जहाँ प्रायः स्वयं को साम व योग्य पाता है, आत्मविश्वास से परिपूर्ण होता है, वही एक दिव्यांग विद्यार्थी के लिए स्वयं को मूल्यहीन, दीन–हीन मानना अति सहज है। कारण वह इन गुणों से वंचित है।

जब कोई विद्यार्थी स्वयं को हीन समझने लगता है, नकारात्मक भावना रखता है तो यह उसे वातावरण के साथ परस्पर समायोजित होने में कठिनाई महसूस करता है। साथ ही वातावरण में उपस्थिति विभिन्नताओं के कारण दिव्यांग विद्यार्थी की अभिवृत्ति में विरोध उत्पन्न होने लगता है। शिक्षा के समुचित प्रबंधन द्वारा सही दिशा निर्देश देकर विसंगतियों को दूर किया जा सकता है। उनमें श्रेष्ठ अध्ययन आदतें व श्रेष्ठ समायोजन के क्षेत्रों को विकसित किया जा सकता है।

दिव्यांग विद्यार्थियों में अनन्त संभावनाएं शक्ति, सामर्थ्य, क्षतिपूरक के रूप में विद्यमान रहती है। उनके समुचित उपयोग हेतु आवश्यक है कि जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रगति हेतु देश के भावी

समायोजन का मुख्य तत्व है – स्व (Self), जिसे अध्ययन करने की महत्वपूर्ण विधि है – आत्माभिमान (Self Esteem), वर्तमान सामाजिक परिपेक्ष्य में, परिवेश में सामाजिक आर्थिक स्तर, शिक्षा का माध्यम, विद्यालय का वातावरण व संस्कारों का छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व, आत्माभिमान. स्वप्रत्यक्षीकरण व विचारधारा पर प्रभाव पड़ता है। जब कोई शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों में स्वयं को हीन समझने लगता है, नकारात्मक आत्माभिमान रखता है, तो यह निम्न आत्माभिमान उसे वातावरण के साथ समायोजित होने से रोकता है। इस प्रकार समायोजन व आत्माभिमान परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। साथ ही वातावरण में उपस्थित विभिन्नताओं के कारण विद्यार्थियों की समायोजन व स्वबोध में भेद, विरोध उत्पन्न होने लगता है। शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र–छात्राओं के समायोजन व आत्माभिमान में अन्तर पता लगाने, जानने के मन्तव्य से शोधकार्य में शोधार्थी ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों का चयन कर उनके समायोजन व आत्माभिमान का अध्ययन किया गया।

हैलन कैलर के शब्दों में एक दरवाजा बंद होता है, तो दूसरा दरवाजा खुल जाता है लेकिन अक्सर हम इतनी देर तक बंद दरवाजे को देखते हैं कि खुले दरवाजे का एहसास खत्म हो जाता है। हैलन कैलर नामक जन्मान्ध महिला ने अपने प्रयत्नों से संसार में नाम अमर कर लिया था।

साहित्य समीक्षा

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध–प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधार्थी को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोध से भली–भांति अवगत होना चाहिए। संबंधित साहित्य समीक्षा शोध कार्य के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसके अभाव में शोधार्थी उचित दिशा में एक कदम भी आगे नहीं बढ़

सकता। जब तक शोधार्थी को यह ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या निकले, तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही शोधकार्य की रूपरेखा तैयार कर सकता है। **गुड (Good)** के शब्दों में संबंधित साहित्य की समीक्षा पूरी शोध रिपोर्ट का अभिन्न भाग होना चाहिए न कि एक अनुबंध या असंयुक्त परिशिष्ट। संबंधित साहित्य समीक्षा किसी भी शोध का अविच्छिन्न अंग है तथा उसके उद्देश्य पूर्ति में कई प्रकार से सहायक हो सकती है जैसे–वह शोधकर्ता को ऐसे मॉडल प्रदान कर सकती है जो शोध समस्या को हल करने में मार्ग निर्देशन कर सके।

संबंधित साहित्य से आशय उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोशों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों का समावेश हाता है, जिसके अध्ययन से शोधकर्त्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण की रुपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। वस्तुतः संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना शोधकर्त्ता का कार्य अधूरा रहता है।

आज तक आत्माभिमान एवं समायोजन से सम्बन्धित प्रमुख निम्नलिखित शोधकार्य किए गए हैं:

1. **माथुर मनोरमा (1994–95)**– विकलांग बालकसामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक तनावग्रस्त होते हैंतथा अधिक विचारवान व शंकालु होते हैं।
2. **सिहं एच.बी. (1982)**– ने अपने अध्ययन में पायाकि लड़के व लड़कियों के समूह में समायोजन में अन्तर नहीं है।
3. **कुमारी सरिता एवं कुमारी शाहिन परवीन (1986)**के अनुसार शैक्षिक तथा संवेगात्मक समायोजन के मध्य सार्थ संबंध पाया गया। शैक्षिक समायोजन तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य संबंध पाया गया।
4. **पांडे अनिरुद्ध (1970)**– इन्होंने पाया कि सामाजिक समायोजन के क्षेत्र में तीक्ष्ण बुद्धि वाले विद्यार्थी, सामान्य बुद्धि वाले विद्यार्थियों की तुलना में ज्यादा समस्याओं का सामना करते हैं।
5. **चौहान दीपिका (1991–92)**– उन्होंने अपने शोधकार्य 'विकलांग छात्रों की स्वधारणा, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं समायोजन का अध्ययन' में पाया कि समायोजन की दृष्टि से सामान्य तथा विकलांग छात्रों में कोईसार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
6. **कच्छावाह वनीता (1994)**– उन्होंने पाया कि सामान्य वर्ग व विकलांग वर्ग के छात्रों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

7. राठौड़, कुसुम (2001–02)– शारीरिक विकलांगछात्राएँ छात्रों की तुलना में ज्यादा समायोजित पाई गई।

8. कंसारा हेमलता (2010–12)– के अध्ययन के अनुसार निष्कर्ष शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों में मूक–बधिर व अन्य रूप से शारीरिक बाधित विद्यार्थियों के सम्रग समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

9. शर्मा कल्पना (2013–14)– के अनुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक निष्पति के मध्य सहसंबंध नहीं होता है।

10. चौधरी किरण (2014) – इन्होंने बताया कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पति के संदर्भ में समायोजन म कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

11. राठौड़ गोरखनाथ (2012–14)– इन्होंने बताया किविशेष व सामान्य विद्यालय में विकलांग विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होता है। विशेष विद्यालय के छात्रों का सामाजिक समायोजन सामान्य विद्यालय के छात्रों की तुलना में अच्छा होता

12. जैन अनिता (2014–15)– के अनुसार माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन व शैक्षिक निष्पति के प्राप्तांकों के आधार पर गणना द्वारा धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

13. पियर्स व हैरिस (1964) तथा पुर्की (1970)– के अनुसार स्वबोध तथा शैक्षिक उपलब्धि में उच्चधनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

14. शेवेल्सन व बोलस (1982–83)– के अनुसार निष्कर्ष विद्यालय में विद्यार्थी के प्रत्येक अधिगम स्तर पर अधिगम की सफलता में आत्माभिमान एक महत्वपूर्ण कारक की भूमिका निभाता है।

15. जैन राजेन्द्र कुमार (2007)– उन्होंने बताया कि सामान्य एवं अस्थिदोष युक्त दिव्यांग विद्यार्थियों के आत्माभिमान में पाई वर्ग परीक्षण द्वारा 0.1 सार्थकता स्तर पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। दोनों ही समूहों में सकारात्मक स्व तथा ऋणात्मक स्व वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत लगभग समान पाया गया।

16. अनन्ता देवी (2013)– उन्होंने बताया कि राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालया के विद्यार्थी स्वबोध में अन्तर महसूस नहीं करते हैं।

शोधकर्ता ने पूर्ववर्ती शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययनों का पुनरावलोकन किया तथा यह पाया कि दिव्यांग चिद्यार्थियों से सम्बन्धित अनेक चरों पर अलग–अलग शोधकार्य किए गये हैं, लेकिन

उनके आत्माभिमान एवं समायोजन को लेकर किया गया कोई अध्ययन अभी तक प्रकाश में नहीं आया है। इसलिए शोधकर्ता ने 'उपरोक्त वणित शोध शीर्षक पर शोध करने निश्चय किया।

शोध प्रविधि :–

मूल रूप में सर्वेक्षण पद्धति का सम्बन्ध वर्तमान परिस्थितियों के प्रचलित व्यवहारों, विश्वासों, दृष्टिकोणों या अभिवृत्तियों, जो कि स्थापित है, प्रवृत्तियों को, जो विकसित हो रही हैं, प्रक्रियाओं को, जो गतिशील है, प्रभाव जो कि अनुभव किये जा रहे हैं, से होता है। किन्तु परिस्थितियोंवश जब किसी बड़ी आबादी की समस्त इकाइयों का सर्वेक्षण नहीं हो पाता और केवल एक उपयुक्त न्यादर्श का सर्वेक्षण किया जाता है, तो एक न्यादर्ष के अध्ययन से जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं उनका सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए सामान्यीकरण किया जाता है, उस प्रतिदर्ष के अध्ययन को सर्वेक्षण विधि कहते हैं।

सर्वेक्षणात्मक पद्धति ज्ञान के विकास में सहायक होतो है। यह किसी व्यक्ति के कार्य की प्रगति के लिए तीक्ष्ण दृष्टि प्रदान करती है। अतः इस पद्धति की विषेषताओं को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शोधकार्य सम्पन्न किया गया है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन क्षेत्र के न्यादर्ष के रूप में राजस्थान राज्य के बीकानेर संभाग के चार जिलों 4चूरू, बीकानेर, हनमानगढ़ एवं गंगानगर के शहरी एवं ग्रामीण कुल 50 विद्यालयों को लिया गया है जिसमें 25 सरकारी एवं 25 गैर–सरकारी विद्यालयों के कुल 400 विद्यार्थी लिए गए हैं।

न्यादर्श चयन विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में दत्त संकलन हेतु सोद्देष्य यादृच्छिक न्यादर्ष चयन विधि (Purposive Rendom Sam pling Method) का प्रयोग किया गया है।

3.4 प्रयुक्त उपकरण :–

अनुसंधान में प्रयुक्त उपकरणों का विवरण

उपकरण का नाम	निर्माणकर्ता
आत्माभिमान मापनी (2006)	मॉरिस रोसेनबर्ग एवं जॉन टी.ई. रिचर्डसन
सृजनात्मकता परीक्षण (1973)	डॉ. बाकर मेंहदी
समायोजन परीक्षण (1985)	डॉ. पैनी जैन

3.5 प्रयुक्त सांख्यिकी :–

सांख्यिकी अनुसंधान का मूल आधार है। यह वैज्ञानिक अध्ययन की वह कला तथा विज्ञान है जिसके अन्तर्गत प्रायः पूर्व निश्चित लक्ष्य के आधार पर अमूर्ततथ्यों का परिणाम, मापन तथा विश्लेषण इस उद्देष्य से किया जाता है कि प्राकतिक व सामाजिक घटनाओं के विषय में अनुमानात्मक व तुलनात्मक ज्ञान उपलब्ध हो सके और पर्याप्त मात्रा में सम्बन्धित घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्धों के विषयों में वैज्ञानिक स्तर पर भविष्य कथन की क्षमता उपलब्ध हो सके।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है

- **मध्यमान**

मध्यमान का दूस रा नाम औसत भी है। मध्यमान किसी समूह के प्राप्तांकों का वह मान है जहाँ से प्राप्तकों का वितरण दो समान भागों में बंट जाता है। इसके दोनों ओर प्राप्तांकों का विचलन समान होता है। इसको निम्न सूत्र की सहायता से ज्ञात किया जा सकता है।

मानक विचलन

आंकड़ों का मध्यमान ज्ञात करने के पष्चात उनका मानक विचलन ज्ञात किया जाता है। प्राप्तांकों के मध्यमान से प्राप्त विचलनों का वर्ग करके उनका योग कर औसत ज्ञात करने पर वर्ग किये हुए विचलनों का औसत ज्ञात हो जाता है। जिसका वर्गमूल ज्ञात कर लेते हैं। इस ज्ञात मान को ही श्रेणी का मानक विचलन कहते हैं।

क्रान्तिक अनुपात मान

विभिन्न प्रकार के समूहों के अन्तर की सार्थकता की जाँच की विधियाँ अलग–अलग होत ी हैं। शोध में बड़े समूह के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच क्रान्तिक अनुपात के मान द्वारा होती है।

क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग मध्यमान, मानक विचलन व सह–सम्बन्ध आदि के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए किया जाता है। जब छ का मान 30 या 30 से अधिक होत ा है अर्थात जब समूह बड़े होते हैं तब क्रान्तिक अनुपात की गणना की जाती है।

सारणीयन एवं दत्त विश्लेषण

शहरी एवं ग्रामीण श्रवणबाधित विद्यार्थियों के आत्माभिमान के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना –

तालिका संख्या –1

अध्ययनित न्यादर्श संख्या	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात (CR.Value)	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
'हरी विद्यार्थी	200	*8.15*	*1.35*	*0.75*	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
ग्रामीण विद्यार्थी	200	*7.94*	*1.33*			

उपर्युक्त तालिका संख्या 2 में शहरी एवं ग्रामीण श्रवणबाधित विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्षित किया गया। इनके मध्यमान क्रमशः 8.15 एवं 7.94 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमषः 1.35 एवं 1.33 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रांतिक अनुपात मान (CR.Val ue) 0.75 प्राप्त हुआ है। 398(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0. 05 सार्थकता स्तर का मान क्रांतिक अनुपात की तालिका में 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर का मान 2. 59 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त मान दोनों सार्थकता स्तरों पर कम है, अतः यह निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण श्रवणबाधित विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

International Journal in Management and Social Science
Volume 07 Issue 09, September 2019 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 6.178
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

तालिका संख्या – 6

अध्ययनित न्यादर्श संख्या	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात (CR.Value)	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
'हरी विद्यार्थी	200	*8.24*	*1.47*	*2.94*	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
ग्रामीण विद्यार्थी	200	*7.77*	*1.52*			

उपर्युक्त तालिका संख्या 2 में शहरी एवं ग्रामीण श्रवणबाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्षित किया गया। इनके मध्यमान क्रमशः 8.24 एवं 7.77 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमशः 1.47 एवं 1.52 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रांतिक अनुपात मान (CR.Val ue) 2.94 प्राप्त हुआ है। 398(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0. 05 सार्थकता स्तर का मान क्रांतिक अनुपात की तालिका में 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर का मान 2. 59 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त मान दोनों सार्थकता स्तरों पर अधिक है । अतः यह निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण श्रवणबाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर है।

तालिका संख्या –3

अध्ययनित न्यादर्श संख्या	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात (CR.Value)	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
'हरी विद्यार्थी	200	*8.24*	*1.47*	*2.94*	सार्थक अन्तर	

ग्रामीण विद्यार्थी	200	*7.77*	*1.52*		नहीं हैं।	

उपर्युक्त तालिका संख्या 3 में शहरी एवं ग्रामीण श्रवणबाधित विद्यार्थियों के आर्थिक समायोजन के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्षित किया गया। इनके मध्यमान क्रमशः 7.88 एवं 7.43 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमषः 1.65 एवं 1.83 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रांतिक अनुपात मान (CR.Val ue) 1.94 प्राप्त हुआ है। 398(df) स्वतंत्र ता के अंश पर 0. 05 सार्थकता स्तर का मान क्रांतिक अनुपात की तालिका में 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर का मान 2. 59 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त मान दोनों सार्थकता स्तरों पर कम है, अतः यह निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण श्रवणबाधित विद्यार्थियों के आर्थिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 8

अध्ययनित न्यादर्श संख्या	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात (CR.Value)	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
‘हरी विद्यार्थी	200	*4.14*	*1.69*	*1.64*	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
ग्रामीण विद्यार्थी	200	*4.58*	*2.02*			

उपर्युक्त तालिका संख्या 4 में शहरी एवं ग्रामीण श्रवणबाधित विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्षित किया गया। इनके मध्यमान क्रमषः 4.14 एवं 4.58 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमशः 1.69 एवं 2.02 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रांतिक अनुपात मान (CR.Val ue) 1.64 प्राप्त हुआ है। 398(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0. 05 सार्थकता स्तर का मान क्रांतिक अनुपात की तालिका में 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर का मान 2. 59 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त मान दोनों सार्थकता स्तरों पर कम है, अतः यह निर्धारित शून्य

परिकल्पना स्वीकृत की जाती है तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण श्रवणबाधित विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिणाम, निष्कर्ष, शैक्षिक उपयोगिता, कार्य योजना एवं सुझाव

सम्प्राप्तियाँ :–

परिकल्पना संख्या – 5 : शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं गैर–सरकारी श्रवणबाधित विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिणाम :–

शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं गैर–सरकारी श्रवणबाधित विद्यार्थियों के ''पारिवारिक समायोजन'' में दोनों सार्थकता स्तर (.05 एवं .01) पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया और निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई।

5.2 निष्कर्ष :–

- ग

ामीण क्षेत्र के सरकारी श्रवणबाधित विद्यार्थियों ने समायोजन के ''पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक'' आयामों पर अधिक बल दिया जबकि गैर–सरकारी श्रवणबाधित विद्यार्थियों ने ''संवेगात्मक'' आयाम पर अधिक बल दिया। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी श्रवणबाधित विद्यार्थियों में समायोजन का स्तर उच्च होता है।

- श

हरी श्रवणबाधित विद्यार्थियों ने ग्रामीण श्रवणबाधित विद्यार्थियों की अपेक्षा सृजनात्मकता के सभी आयामों पर अधिक बल दिया। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र के श्रवणबाधित विद्यार्थियों में सृजनात्मकता अधिक पाई जाती है।

- श

हरी क्षेत्र के सरकारी श्रवणबाधित विद्यार्थियों ने गैर–सरकारी श्रवणबाधित विद्यार्थियों की अपेक्षा

सृजनात्मकता के सभी आयामों पर अधिक बल दिया। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र के सरकारी श्रवणबाधित विद्यार्थियों में सृजनात्मकता अधिक पाई जाती है।

- ग

ामीण क्षेत्र के सरकारी श्रवणबाधित विद्यार्थियों ने गैर–सरकारी श्रवणबाधित विद्यार्थियों की अपेक्षा सृजनात्मकता के सभी आयामों पर अधिक बल दिया। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी श्रवणबाधित विद्यार्थियों में सृजनात्मकता अधिक पाई जाती है।

शैक्षिक उपयोगिता :–

- व

र्तमान समय में विद्यार्थियों, षिक्षकों, अभिभावकों एवं समाज के विभिन्न वर्गों को समायोजन एवं सृजनात्मकता के प्रति संव`दनषील व सकारात्मक होने की आवष्यकता है।

- इ

स प्रकार के शोध कार्य इस क्षेत्र में एक नई दिषा प्रदान करने का कार्य करेंगे। शोधकर्त्री इस प्रकार की समस्याओं पर भविष्य में निरन्तर कार्य करने की प्रबल इच्छुक है।

शिक्षा, समाज एवं राष्टं उत्थान के क्षेत्र में निरन्तर उर्ध्वगामी विकास हो इसके लिए आवष्यक है कि षिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान के माध्यम से समाज एवं राष्टीय परिपेक्ष से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का पहचान कर उनके कारणों एवं तथ्यों की खोज की जाये। शोधकर्त्री को आषा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत शोधकार्य से विद्यालय, समाज, घर–परिवार सभी स्तरों पर सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास सम्भव होगा।

5.4 सुझाव :–

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव :–

- श्र

वणबाधित विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों, आत्मविष्वास एवं आदर्ष सम्बन्धी विचारों का अध्ययन किया जा सकता है।

- f

वभिन्न प्रकार के संवेगात्मक व्यवहार के श्रवणबाधित विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन शीर्षक लेकर शोधकार्य किया जा सकता है।

- f

वभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व के श्रवणबाधित विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर, रूचि एवं समस्या समाधान का अध्ययन किया जा सकता है।

- f

शक्षा के गुणात्मक स्तर में सुधार हेतु किये जाने वाले अन्य प्रयासों पर शोध कार्य किया जा सकता है।

- f

वभिन्न प्रकार के रक्त समूहों वाले श्रवणबाधित विद्यार्थियों के आत्माभिमान, समायोजन एवं सृजनात्मकता में सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोधकार्य किया जा सकता है।

- श्र

वणबाधित विद्यार्थियों की कुण्ठा, दुश्चिन्ता एवं मनःस्तापिका में सम्बन्ध का अध्ययन शीर्षक पर शोधकार्य किया जा सकता है।

- क

ला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय में अध्ययनरत श्रवणबाधित विद्यार्थियों के आत्माभिमान, समायोजन एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

- f

वद्यार्थियों के व्यक्तित्व–विकास पर मूल्य–शिक्षा के प्रभाव को आवास, लिंग एवं विद्यालय के प्रकारों के आधार पर भी अनुसंधान कार्य किया जा सकता है।

अध्यापकों हेतु सुझाव :–

- ि

शक्षकों को कमजोर एवं अनुत्तीर्ण श्रवणबाधित विद्यार्थियों पर विषेष कक्षाऐं लगाकर निष्कषात्मक समालोचन भी करनी चाहिए।

- श्र

वणबाधित विद्यार्थियों को अत्यधिक गृहकार्य नहीं देना चाहिए।

- अ

पने अध्यापन में शिक्षकों को प्रोजेक्ट विधि एवं समस्या विधि का उपयोग करना चाहिए ताकि छात्र क्रियाशील रहकर ज्ञानार्जन कर सके।

अभिभावकों हेतु सुझाव :–

- अ

भिभावकों को बच्चों की इच्छा और योग्यता के अनुसार विषय चयन की स्वतंत्र ता देनी चाहिए।

- ह

र समय पढ़ने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए।

- अ

भिभावकों को चाहिए कि बच्चों को खेलने का पर्याप्त समय दें।

- अ

भिभावकों को अपने बच्चों की तुलना अन्य बच्चों से नहीं की जाये।

- य

ोग्यतानुसार आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

हिन्दी सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. अरोड़ा , श्रीमती रीता (2005) : ''शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार'' शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या. 326–327

2. कपिल, एच के. (1979) : अनुसंधान विधियाँ'' द्वितीय संस्करण, हरिप्रसाद भार्गव हाऊस, आगरा, पृष्ठ संख्या–23

3. कुंव र भुवनेन्द्र सिंह, (2004) : ''स्वाध्याय एक साधना'' कल्याण वर्ष 82 सं. 2, गीता प्रेस गोरखपुर, पृ. स. 511.

4. कोठारी, सी.आर. (2008) : ''अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी'' न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कॉर्पोरेषन, आगरा, पृष्ठ संख्या–2

5. खान, ए.आर. (2005) : ''जीवन कौशल शिक्षा'' माध्यमिक षिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर , पृ"ठ संख्या–14

6. गुप्त, नत्थूलाल (2000) : मूल्य परक षिक्षा और समाज' नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, पेज–122

7. गौड़, अनिता (2005) : ''बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारें' ' राज पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, पृ"ठ संख्या–14

8. चतुर्वेदी, त्रिभुवननाथ (2005) : ''पारिवारिक सुख के लिए है किशोर मन की समझ'' श्रीविजय इन्द्र टाइम्स, नई–दिल्ली, अंक–8, पृष्ठ संख्या–25

9. चौबे, सरयू प्रसाद (2005) : ''शिक्षा मनोविज्ञान'' इण्टरनेषनल पब्लिकेषन हाऊस, मेरठ, पेज न. 184

10. चौहान, एस.एस (1996) : ''सर्वांगीण बाल विकास'' आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, पेज प. 591

11. जायसवाल, सीताराम (1994) : 'शिक्षा मनोविज्ञान' आर्य बुक डिपो मंदिर, करोल बाग, नई दिल्ली पेज 221

List of English Books:-

1. Aggarwal , J.C % "Educational Research" Arya Book Depot, Agra (2002)

2. Best, John W. & James V.Khan (1986): % "Research in Education", Prentice Hall of India Private limited, New Delhi -110001 Page 90

3. Biddle Ellena % "Contemporary Research on Teacher effectiveness", (1964) Holt , Rinehart and Weston

4. Bright, Man E.S. % 'A Philosophy of Religion, Englewood Etiffa' J.N. (1958) Printic Hall Inc. P- 12

5. Bhatnagar, R.P. and Bhatnagar, Minakshi (1994) % "Experimental Research in behavioral Science" Igol Book international, Meerut.

6. Cluchohn, C. (1951) % 'Values & Value Orientations in the Theory of Action' Harvad Univ. Press Cambridge, Page No. 04

7. Coon, Dennis % "Introduction to Psychology Exploration and (1997) application." III edition, West Publishing Company, Saint. Paul., page-295